इन्टरव्यू- ३७

प्र: आप नाम बताइए पहले ?
ज: मेरा नाम मुखतार अहमद है।

प्र: आप क्या करते है ?
ज: हम साड़ी बनाते है।

प्र: आप क्या कह रहे थे कि क्या जोड़ने का ?
ज: अभी लपेटन हेा रहा जब तैयार हो जायेगा तो घर जा कर जोड़ेगे एक एक तार जोड़ोंगे। उन्तीस सौ (2900) तानी रहती है।

प्र:आप बुनाई भी करते है ?
ज: हां जोड़ने के बाद, मुरली पार करेंगे फिर साड़ी नाप कर बिनेंगे फिर अपना बाना लायेंगे मार्केट से इसमें जो भी मैचिंग होगा लायेंगे, फिर उसे तैयार करेंगे।

प्र: आप अपने करघे पर बुनते हैं ?
ज: हां।

प्र: कितने करघे आपके पास ?
ज: चार।

प्र: चार पर घर के ही लोग बुनते हैं ?

ज: तीन घर के एक बाहर के एक मजदूरा है, आकर बीनता है।
(साईड ए खत्म)
प्र: तानी-बाना आपका होता है ?
ज: हां, जब मजूरी का आते है तो उसमे कम पैसा मिलता है। तो कभी लेकर भी आते है कभी अपना भी करते है।

प्र: आप कभी मजूरी पर भी करते हैं ?
ज: हां।

प्र: साड़ी किसको बेचते हैं ?
ज: खुदी बेचते हैं चौक मे ले जाकर जो भी 19-20 रहा तो कट जाता है तो 1500-1200 लेकर आते हैं। काम के हिसाब से मिलता है।

प्र: एक साड़ी की कितनी लागत आती है ?
ज: वही कभी 900-950 सौ आती है।

प्र: मजदूरी हटा कर ?
ज: हां, जैसे तानी का बाना का तार का सब चीज का मिलकर। साड़ी लेकर मार्केट में जावे हैं तो 1200-1100 1500 मिलता है लागत तो आती है। 1550 की अगर उन्नीस-बीस रहा तो कट कर मिलता है फ्रेश रहेगी तो पूरा मिलता है। 1550।

प्र: कुल कितनी आमदनी हो जाती है कुल करघे से ?
ज: अपने में रहेगी तो महीने में 8-9 हजार रुपये की हो जाती है।

प्र: मजदूरी कितनी देते है मजदूर को ?
ज: 500 भी देते हैं 450 भी देते हैं। मैंचिग के हिसाब से।

प्र: मैचिंग मतलब ?
ज: जैसे हल्का भारी रहता है उस हिसाब से यानी डिजाइन के हिसाब से 1800 भी रहती है।

प्र: आपकी कितने साल से बुनकारी है ?
ज: 17 साल से।

प्र: आपके बाद दादा परदादा सब इसी में रहे हैं ?
ज: हां।

प्र: पहले से अब में करघे में घटोतरी-बढ़ोतरी हुई है ?
ज: घट गया बढ़ा नहीं है।

प्र: पहले कितना था ?
ज: 8 या 4 घट गया।

प्र: बेचना पड़ा कि भाईयों में बंट गया ?
ज: भाइयों में अलगुजारी में घट जाता वैसे ही दो ठो उनके जिम्मे आ गया, दो ठो उनके।

प्र: बुनकारी में जब से आप है तब से कोई अंतर आया है क्या ?
ज: बहुत अंतर आया है।

प्र: किस तरह का ?
ज: जो माल 2000 में बिकता वो 1000-1200 में बिक रहा है। मार्केट में ले जाओ नहीं बिकता तो वापस लाना पड़ता है। दुकान पर बेचना पड़ता है तो 8-9 सौ मिल जाता है तो उसमें मजदूरी नहीं मिलती जो नगद लगा रहता है वहीं मिल जाता है।

प्र: पहले ज्यादे दाम में बिकती थी ?
ज: हां।

प्र: पहले कितने में बिकती थी ?
ज: 2000-2500 जैसा ग्राहक मिल जाता था।

प्र: पहले मंहगी थी अब सस्ती क्यों हो गई ?
ज: पहले डिजाइन का पैसा मिलता था अब जो लेने वाले है वो सब चीज का जोड़कर पैसा देते हैं।

प्र: कौन लेने वाला ग्राहक या व्यापारी लोग ?
ज: वहीं ग्राहक लोग ही व्यापारी लोग अब केवल लागत जोड़ के देते हैं। 100 रुपये मुनाफा देते हैं।

प्र: वो लोग कितने में बेचते हैं ?
ज: हमसे 2000 में खरीदकर 2500 3000 में बेचेंगे।

प्र: अब नहीं मिलता क्या अब डिजाइन खतम् हो गई है ?
ज: नहीं डिजाइन एक से एक है पैसा नहीं है।

प्र: आप लोग की कोई समिति भी है ?
ज: नहीं, बस भाईचारे में चलता है। मार्केट हर आदमी जाता नही हमारे पास चार करघा है तो हमारे पास कोई आ गया तो बने एक करघे वाला तो वो लेकर चल गया या हम ले लिए 100 रुपया हम रखकर उसको दे दिये। कहीं जा कर बेचे तो 200 रुपया हमको मिल गया। खाली दौड़ाने के लिए।

प्र: बेचने के लिए केवल आप लोग ऐसे बना लिए हैं ?
ज: हां।

प्र: लेकिन कोई समिति नहीं बनाई ?
ज: नहीं हो पायगी न।

प्र: कोई समिति है ही नहीं की आप जुड़े नहीं है ?
ज: नहीं, है ही नहीं।

प्र: सरकार से कभी मदद मिली है ?
ज: कभी नहीं।

प्र: बैंक से जो लोन-वोन मिलता है ?
ज: कभी नहीं।

प्र: मिलता नहीं की आपको पता नहीं ?
ज: मिला ही नहीं तो पता कहां से होगा।

प्र: पता किए है बैंक जा कर ?
ज: सुने थे लेकिन पता नहीं किए इसलिए की 100 रुपये का नुकसान नहीं करना दौड़े भागे अपना काम खराब करें दिन भर लाइन में लगें एक मिले नहीं मिले इससे बढ़ईयां है अपनी मजदूरी करते रहेंगे।

प्र: कभी कर्ज लेने की जरूरत पड़ी है ?
ज: नहीं।

प्र: कभी लेना होगा तो किससे लेंगे ?
ज: भाइचारे से लेंगे।

प्र: बैंक से नहीं
ज: नहीं।

प्र: जो आप ये लपेटन को काम कर रहे हैं उसके लिए आप आर्डर भी लेंते है ?
ज: नहीं अपने लिए करते है कियरा जाता है जैसे कि कोई बहुत मजबूर है अकेला आदमी है तो करा देते है हम लोग।

प्र: आप पावरलूम में जाना चाहते हैं ?
ज: नहीं हम हथकरघा में ही रहना चाहते हैं।

प्र: क्यों ?
ज: क्योंकि हथकरघा वाले हथकरघा में और पावरलूम वाले में ही रहेंगे।

प्र: क्यों हथकरघा वाले ही तो पावरलूम में गये हैं ?
ज: नहीं हथकरघा वाले अलग है पावरलूम वाले अलग है आपको सोचना चाहिए हथकरघा वाले हाथ से बनाताहै डिजाइन। पावरलूम मशीन से चलता है लाईट से चलता। इसमें चार घंटा लाईट नहीं है तो भी अंधेरे में 50 रुपया चाहे आदमी कमा सकता है उसमें नहीं कम सकते इसलिए नहीं जाना चाहते।

प्रः आगे भी यही करते रहेंगे ?
जः हां
सरकार बुनकर को सुविधा दिया है लेकिन इसका कोई मुकम्मल बात नहीं है इसलिए की जब तक उसमें रुपया जमा नहीं किया जाएगा तब तक वो देगी नहीं कॉलोनी।

प्रः कितना रुपया जमा कराना होगा ?
जः बहत्तर हजार रुपया। 72 हजार देंगे तो प्लाट हमारे नाम होगी दो जगह इसलिए कोई जाने की तैयार नहीं है। पता नहीं रुपया देने के बाद भी पास होगा की नहीं। उतना दूर कोई अपना घर छोड़कर नहीं जाना चाहता।

प्रः आपके जान पहचान का कोई गया है ?
जः हां चार पांच लोग गये हैं जैसे नियाज है वहां अपना एक करघा लगाया है मदनपूरा के एक हो गया-नाम नहीं जानते।

प्रः आप गये हैं ?
जः हम जाते हैं बराबर तानी जुड़ाने जाते रहते हैं।

प्रः आप भी प्रयास कर रहे हैं ?
जः हां लेकिन हो नहीं सकता।

प्रः क्यों ?
जः पहले 6 हजार में होता था अब चौदह हजार देंगे तब होगा।

प्रः अभी 72 हजार बोल रहे थे ?
जः नहीं जब 14 हजार फार्म का देंगे तब वो रुम की चाबी देगा। उसके बाद महीना 682 रुपये देना होगा। किश्त बनाकर। बस इसके आगे हम कुछ नहीं जानते कि आप को बता सकें।